"शौच"

• निवली करम – भुअंगम भाठी – रेचक पूरक कुंभ करै । बिन सतिगुर किछ सोझी नाही – भरमे भूला बूड मरै । अंधा भरिआ भर-भर धोवै – अंतर की मल कदे न लहै । नाम बिना फोकट सभ करमा – जिउ बाजीगर भरम भुलै ।

अर्थः- अज्ञानी अंधे मनुष्य प्रभू का नाम बिसार के - निवली कर्म करता है, कुण्डलनी नाड़ी से दसम द्वार में प्राण चढ़ाता है, श्वास उतारता है, श्वास चढ़ाता है, श्वास (सुषुम्ना में) टिकाता है । पर इस भटकना में गलत

रास्ते पर पड़ कर (इन कर्मों के चक्करों में) फस के आत्मिक मौत सहेड़ लेता है । सतिगुरू की शरण पड़े बिना सही जीवन की इसको समझ नहीं पड़ती । अंधा मनुष्य विकारों की मैल से भरा रहता है, बार-बार गलत रास्ते पर पड़ कर और विकारों की मैल से लिबड़ता है (निवली कर्म आदि के द्वारा) यह मैल धोने का यत्न करता है, पर (इस तरह) मन की मैल कभी नहीं उतरती । (ये रेचक, पूरक आदि) आरे ही कर्म परमात्मा के नाम के बिना व्यर्थ हैं । जैसे किसी मदारी को देख के (अंजान मनुष्य) भुलेखे में पड़ जाता है (कि जो जो कुछ मदारी दिखाता है सचमुच उसके पास मौजूद है, वैसे ही कर्म-काण्डी मनुष्य इन नाटकों-चेटकों में भुलेखा खा जाता है ।

खट करम नाम निरंजन सोई । तू गुण सागर अवगुण मोही ।

अर्थः- हे प्रभू ! शास्त्रों में बताए गए छह धार्मिक कर्म (मेरे लिए) तेरा नाम ही है, तेरा नाम माया की कालिख से रहित है । हे प्रभू ! तू गुणों का खजाना है, पर (पर तेरे नाम से टूट के और अन्य कर्म-काण्डों में पड़ कर) मेरे अंदर अवगुण पैदा हो जाते हैं ।

झूठी मन की मत है - करणी बाद बिबाद । झूठे विच अहंकरण है - खसम न पावै साद । बिन नावै होर कमावणा - फिका आवै साद । दुसटी सभा विगुचीऐ - बिख वाती जीवण बाद ।

अर्थः- मनमुख के मन की मति झूठ की ओर ले जाती है, उसके कर्तव्य भी निरे झगड़े का मूल हैं और व्यर्थ जाते हैं । उस झूठ विहाजने वाले के अंदर अहमं-अहंकार टिका रहता है उसको पति-प्रभू के मिलाप का आनंद नहीं आ सकता । परमात्मा के नाम को छोड़ के (निवली कर्म आदि)

जो कर्म भी किए जाते हैं उनका स्वाद फीका होता है (वह जीवन को फीका ही बनाते हैं) ऐसी बुरी संगति में (बैठने से) ख्वार हुआ जाता है क्योंकि ऐसे लोगों के मुँह में (फीके बोल-रूप) जहर होता है और उनका जीवन व्यर्थ जाता है ।

ए भ्रम भूले मरह न कोई । सतिगुर सेव सदा सुख होई । बिन सतिगुर - मुकत किने न पाई । आवह जांह मरह मर जाई ।

(1343)

अर्थः- न्योली कर्म आदि की भ्रम में भूले हुए, हे लोगो! (इस राह पर पड़ कर) आत्मिक मौत ना सहेड़ों । सतिगुरू की शरण पड़ने से ही सदा का आत्मिक आनंद मिलता है । गुरू की शरण के बिना कभी किसी को (माया के मोह से) निजात नहीं मिलती । वे सदा पैदा होते हैं और आत्मिक मौत सहेड़ते हैं । (जो भी मनुष्य गुरू की शरण से और सिमरन से वंचित रहता है) वह आत्मिक मौत सहेड़ता है ।

- भरीऐ हथ पैर तन देह । पाणी धोते उतरस खेह ।

अर्थः- अगर हाथ या पैर या शरीर मैला हो जाए, तो पानी से धोने से वह मैल उतर जाती है ।

मूत पलीती कपड़ होइ । दे साबूण लईऐ ओह धोइ ।

अर्थः- अगर (कोई) कपड़ा मूत्र से गंदा हो जाए, तो साबुन लगा के उसको धो लेते हैं ।

भरीऐ मत पापा के संग । ओह धोपै नावै के रंग ।

अर्थः- (पर) यदि (मनुष्य की) बुद्धि पापों से मलीन हो जाए, तो वह पाप अकाल-पुरख के नाम में प्यार करने से ही धोया जा सकता है।

पुंनी पापी आखण नाह । कर कर करणा लिख लै जाह ।

आपे बीज आपे ही खाह । नानक हुकमी आवह जाह । (4)

अर्थः- हे नानक ! 'पाप' या 'पुण्य' कहने की बातें नहीं है, सच-मुच ही जिस तरह के कर्म तू करेगा वैसे ही संस्कार अपने अंदर अंकुरित करके साथ ले कर अंकुरित करके ले कर जाएगा । जो कुछ तू खुद बीजेगा, उसका फल स्वयं ही खाएगा। (अपने बीजे मुताबिक) अकाल पुरख के हुकम में जनम मरण के चक्कर में पड़ा रहेगा ।

• अंतर मैल जे तीरथ नावै - तिस बैकुंठ न जानां । लोक पतीणे - कछू न होवै - नाही राम अयाना ।

अर्थः- अगर मन में विकारों की मैल (भी टिकी रहे, और) कोई मनुष्य तीर्थों पर नहाता फिरे, तो इस तरह उसने स्वर्ग में नहीं जा पहुँचता; (तीर्थों पर नहाने से लोग तो कहने लग पड़ेंगे कि ये भगत है, पर) लोगों के पतीजने से कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि परमात्मा (जो हरेक के दिल की जानता है) अंजान नहीं है ।

पूजह राम - एक ही देवा । साचा नावण - गुर की सेवा ।

अर्थः- गुरू के बताए मार्ग पर चलना ही असल (तीर्थ) स्नान है । सो, एक परमात्मा देव का भजन करो ।

जल कै मजन जे गत होवै - नित-नित मेंडुक नावह । जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर - फिर-फिर जोनी आवह । (४४५)

अर्थः- पानी में डुबकियां लगाने से अगर मुक्ति मिल सकती होती तो मेंडक सदा ही नहाते हैं । जैसे वह मेंढक हैं वैसे वे मनुष्य समझो; (पर, नाम के बिना वो) सदा जूनियों में पड़े रहते हैं ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"